श्रम विमाग

दिनांक 1 दिसम्बर, 1987

सं ग्रों वि वि एफ वी 187-87 47875. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मुख्य प्रशासक, फरीदाबाद, मिश्रत प्रशासन, फरीदाबाद के श्रमिक श्रों पूर्ण सिंदू, पृत्र श्री चिरन्जों सिंह, मार्कत श्री देवी सिंह, गांव व डाकखाना कोराली, तहसील बल्बगढ़ तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

थीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

दसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते दृए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रीद्यितियम की भारा 7 क के श्रधीन गठित श्रौद्योगिक पिष्ठकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं श्रथवा विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाद 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :--

क्या श्री पूर्ण सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदा है ?

सं को वि /एफ डी | 96-87 | 47957. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं श्रेशासक, मार्किट कमेटी, पलवल, जिला फरीदाबाद, के श्रीमक श्रीमती जमना देवी, स्वीपरेस, पत्नी श्री पहुलाद मार्फत मकान नं 176, वार्ड नं 1, शास्त्री कालोगी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित यामने के सम्बन्ध में कोई भोडोपिक विवाद है;

भीर चूकि हरियाणा के राज्यपान ६स विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की श्रारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त श्रिधिनियम की घारा 7क के श्रधीन गठित भौद्योगिक श्रिधकरण, हिरियाणा, फरीदाबाद की भीचे विनिद्धित मामला जो कि उक्त प्रयन्धकों तथा श्रीमक के बीच या ता विवादशस्त मामला/मामले हैं भयवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाद 3 मास में देने हेतु विर्दिष्ट करते हैं :--वया श्रीमती जमना देवी, स्वीपरेस, पत्नी श्री पहलाद की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि
नहीं, सो वह किस राहत की हककार है ?

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विध्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीधोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घरा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (भ) द्वारा प्रदान की गई अभिक्रियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित श्रीधोगिक अधिकरण, हरियाणा, करीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवासकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/मामले हैं बखवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री सतीश कुमार की सेवाओं का समापन ज्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?

आर. एस. प्रग्रवास, उप-संचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग।

27839CS(H)-Govt. Press, U.T., Chd.